जगदीश चन्द्र पाण्डेय

जन्म तिथि - 15.11.1965
जन्म स्थान - पिथौरागढ़
पिता का नाम - स्व. श्री लालमणी पाण्डेय
माता का नाम - स्व. श्रीमती तुलसी देवी पाण्डेय
मोबाइल - 7891048887

रोटी बाहर ले गयी, छूटा अपना गाँव।
कब चौपालें गाँव की, नापेंगे यह पाँव।।
नापेंगे यह पाँव, जहाँ बैठा करते थे।
सपनों के संसार, उड़ानें मिल भरते थे।
कहता है जगदीश, रही किस्मत ही खोटी।
जहाँ पलायन बाद, मिली खाने को रोटी।।

****

दाता तुमको याद कर, गूँथूं ऐसा हार।
काम, क्रोध, मद, लोभ के, हों सब दूर विकार।।
हों सब दूर विकार, कर्म हों सच्चे मन से।
हो सेवा दिन-रात, यही कोशिश हो तन से।
जीवन में जगदीश, रखूं तुमसे ही नाता।
तूफानों से पार, लगाना नैया दाता।।

****

छाये मेघा जब गगन, करे धरा मनुहार।
अभिलाषा है मेह की, हो कण-कण गुलजार।।
हो कण-कण गुलजार, धरा यह चाहत रखती।
इसीलिए दिन-रात, मेघ को तकती रहती।
सच तो यह जगदीश, नेह दोनों को भाये।
छोड़ें मेघ फुहार, धरा में मस्ती छाये।।

****

सागर कहता सुन नदी, मीठा पानी डाल।
सूख रहा मेरा गला, हाल हुआ बेहाल।।
हाल हुआ बेहाल, सदा ही मैं था खारा।
चढ़ा करेला नीम, मिला जब कूड़ा सारा।
कहता है जगदीश, डाल दे आधी गागर।
शुद्ध नीर की माँग, नदी से करता सागर।।

****

माया की माया गजब, रहे न मन संतोष।
अपने उर झाँकें नहीं, दें दूजे को दोष।।
दें दूजे को दोष, समय की है बलिहारी।
पाकर माया खूब, मगन हैं सब नर-नारी।
कहता है जगदीश, देख धन मन हर्षाया।
भाये सबको खूब, गजब माया की माया।।

****

मेरे जी की भी कभी, सुन लो जी भरतार।
बैठी हूँ मधुमास मैं, कर सोलह श्रृंगार।।
कर सोलह श्रृंगार, जवानी बीती जाये।
मिले न तेरा साथ, मुझे कुछ रास न आये।
कहता है जगदीश, जिया डरता बिन तेरे।
छोड़-छाड़ परदेश, लौट घर साजन मेरे।।

****

सावन झूमा जोर से, गाये वर्षा गीत।
मैं गूँगा-बहरा खड़ा, करता याद अतीत।।
करता याद अतीत, एक थी शाम सुहानी।
हम दोनों के बीच, चली जो प्रेम कहानी।
कहता है जगदीश, बड़ा था रिश्ता पावन।
गरजे बादल खूब, और बरसा तब सावन।।

****

बादल, अंबुद, घन,घटा, अरु पयोद, घनश्याम।
घनमाला, मेघावली, सब तोयद के नाम।।
सब तोयद के नाम, जलद भी यह कहलाता।
जलधर, वारिद, मेघ, पयोधर किसे न भाता।
कहे उमड़ता देख, विरहणी होकर घायल।
प्रिय तुम आओ पास, और बरसो बन बादल।।

****

पाती लेकर आ गयी, जाने का संदेश।
सरहद पर दुश्मन खड़ा, करे चुनौती पेश।।
करे चुनौती पेश, छली अक्सर छल करता।
सुने न कोई बात, सदा लातों से डरता।
विदा करो माँ आज, सरहदें मुझे बुलाती।
रण के सारे हाल, कहेगी मेरी पाती।।

****

पावन रिश्ता प्रेम का, सुख-दुख का आधार।
बना रहे विश्वास तो, झलके खुशी अपार।।
झलके खुशी अपार, शांति दिखती है ऐसी।
तूफानों के बाद, जलधि की हो छवि जैसी।
आँगन तो जगदीश, वही लगता मनभावन।
जहाँ प्रेम के मेघ, बरसते हैं नित पावन।।

****